

लगायतों द्वारा अलग धार्मिक पहचान की माँग

संदर्भ

कर्नाटक में वशिष्ठ लगायत महासभा ने लगायत परंपरा को अलग धर्म घोषित करने की माँग की है।

महासभा के अध्यक्ष शमनूर शविशंकरप्पा के अनुसार इस स्वतंत्र धर्म की स्थिति की माँग में कोई भ्रम नहीं था। वीरशैव/लगायत धर्म एक स्वतंत्र धर्म है। यह हिंदू धर्म से अलग है और वह इसके लिये स्वतंत्र धर्म की सामाजिक स्थिति चाहते हैं।

प्रमुख बिंदु

- हालाँकि, भाजपा और कुछ संतों का कहना है कि वे हिंदू धर्म का हिस्सा हैं। अलग-अलग राजनीतिक दलों से 'लगायत धर्म' के स्वतंत्र धर्म के दावे के बारे में अलग-अलग विचार उभर रहे हैं।
- कर्नाटक के उत्तरी जिलों में लगायत समुदाय की आबादी अधिक है।

क्या है लगायत/वीरशैव परंपरा

- लगायत अर्थात् भगवान शिव का लिंग धारण करने वाले।
- वीरशैव का अर्थ है भगवान शिव के वीर।
- बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में एक नवीन आंदोलन का उदय हुआ, जिसका नेतृत्व बासवन्ना (1106-68) नामक एक ब्राह्मण ने किया।
- बासवन्ना कलाचूरी राजा के दरबार में मंत्री थे। इनके अनुयायी वीरशैव व लगायत कहलाये।
- आज भी लगायत समुदाय का इस क्षेत्र में महत्त्व है। वे शिव की आराधना लिंग के रूप में करते हैं। इस समुदाय के पुरुष अपने वाम स्कंध पर चाँदी के एक पट्टे में एक लघु लिंग को धारण करते हैं।

वशिष्ठ

- लगायतों का वशिष्ठ है कि मृत्यु के बाद भक्त शिव में लीन हो जाएँगे तथा इस संसार में पुनः नहीं लौटेंगे। वे धर्मशास्त्र में बताए गए श्राद्ध संस्कार का पालन नहीं करते और अपने मृतकों को विधिपूर्वक दफनाते हैं।

विरोध

- लगायतों ने जातिकी अवधारणा और कुछ समुदायों के "दूषित" होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का भी विरोध किया। पुनर्जन्म के सिद्धांतों पर भी उन्होंने प्रश्नवाचक चिह्न लगाया। इन सब कारणों से ब्राह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन समुदायों को नमिन स्थान मिला था, वे सभी लगायतों के अनुयायी हो गए।